व

या

र

पु

र

व

इ

या

बयार पुरवइया

[भोजपुरी गीत]

प्रकाशक :

भारतीय प्रकाशन

९२/१३६, स्वामी विवेकानन्द मार्ग

इलाहाबाद

गीतकार :

भोलानाथ 'गहमरी'

९४/१४२, हीवेट रोड,

इलाहाबाद

प्रथम संस्करण

नवम्बर, १९६४

मूल्य :

३-९० पैसे



होइहें दरस मइया कब ले बता दऽ आजु,
बालक समुझि के ना हमके बिसरिहऽ ।

खोजीले, पूछीले, हंसन क झुण्डन में,
या की निहारीले कमलन क फूलन में.
तोहरे भरोसा बा भारी हम नदानन के,
कि डूबत भँवर से तूँ आ के उबरिहऽ ।



संकेत :

भक्ति-गीत : पृष्ठ

अगम राह निबुकइहऽ	१३
मीले ना संवरिया हमार	१५
डगरिया कइसे-कइसे कटिहे	१७
रहिया से राही बड़ी दूर	१९
लागल चुनरिया मे दाग	२१
बिरही रतिया डँसे	२३

बरखा-बहार :

बदरा असाढ़ के	२६
बदरा ले जा सनेस	२९
बरखा बहार	३१
सावन-भादों	३३
चमके जिनिगिया मे भोर	३५
बदरा बरिसे झूम के	३६
निंदिया खुलि-खुलि जाय	३८

शरद :

डोले सरद बयार	४०
आइल सरद मुसुकात	४२

दीपावली :

जागलि धरती के भाग	४५

बसन्त :

बसंती बयार	४७
गुलाबी लहरा	४६
बोलि उठ कोइलरिया	५१

चइता :

कवना बने बाजेलें	५२
कवने रंग फुलवा फुलइलें	५३

ग्रीष्म :

अगिया बहल बयार	५४
धरती करे पुकार रे	५६

बारह मासा :

मन के सुगना	५८

देश-भक्ति गीत :

देसवा मे बिहसेला भोर	६०
देश के लाल	६२
मोर सिपाही हो	६४
भारती पुकारे	६५
धनि-धनि धरती हमार	६६
बिहँसे अँजोरिया	६८

बिखरे मोती :

मजदूर, एक रूप	७०
जिनिगी किसान के	७२
हमरो गाँव रे	७७
कहीं भींजे न कजरा	८०

दरद न बूझे बेदरदी ८१
गायक से ८३
उठे हिया पीर ८५
सजन निरमोही ८७
सुधि के बदरा ८९
भरम मोरे मन के ९१
पनघट ९३
जनि जा बिदेस ९५
याद बचपन के ९७
भटकल भूलल मीत १००
नेहियाँ के दियना १०२
चंदा मामा से १०४
ना जाने कजरा के मोल १०७
मिलल जो धार १०९
भरलि गगरिया रस के १११
अरे मन जो मीत पूछे ११३

श्रद्धांजलियाँ

सरधा क फूल ११६
महाकवि निराला ११९
नेहरू के याद में १२०
सुकवा डुबल कवनी ओर १२३
याद सहीदन के १२६

•

एक दृष्टि :

'बयार पुरवइया' के भोजपुरी गीतों को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता है। गहमरी जी ने भोजपुरी बोली के मुहावरों और छंदों को पहचाना है, और उनकी सहायता से अपनी रचनाओं को हृदयग्राही बनाने का सफल प्रयास किया है। इनके मुख से इनके गीत और भी प्रभावोत्पादक सुनाई देते हैं।

निस्सन्देह भोजपुरी बड़ी सशक्त भाषा है। उसके परुष और सुकुमार पहलुओं की जानकारी, और उपयुक्त रूप में प्रयोग करने का कौशल भी श्लाघ्य है। अतः इसका उद्देश्य सदैव उपयोगी होना वांछनीय है।

'बयार पुरवइया' के अन्य गीतों के साथ ही कुछ ऐसे भी गीत हैं जिनका चित्रण बड़ा ही स्वाभाविक और हृदयस्पर्शी है। प्रतीक्षा गीत 'कहीं भींजे न कजरा' मे विरहिणी की आकांक्षाओं के साथ ही साथ उसकी कल्पित आशंकाओं को भी अभिव्यक्त करना कवि की दक्षता का ही परिचायक है। 'बदरा असाढ़ के' तथा 'सरद' आदि गीत ऐसे हैं जिनमें कवि ने सुन्दर ही नहीं, अनूठे प्रयोग किये हैं। 'बचपन के याद' में इनके छंद बरबस बाल्यावस्था के बीते हुए क्षणों की ओर मुड़ कर देखने को बाध्य कर देते हैं। 'निराला' तथा स्वर्गीय नेहरू का लोक-भाषा मे मार्मिक वर्णन स्वयं मे ही कवि की प्रतिभा का एक उदाहरण है। ग्राम-चित्रण भी अच्छा है, परन्तु ग्राम जीवन के मीठे पक्ष भी हैं और कड़वे भी। गहमरी जी जैसे समर्थ भाषा कवि से यह भी आशा की जानी चाहिये कि उनकी लेखनी शक्ति का उपयोग ग्राम जीवन के दूसरे पक्षों को लेकर उसे अधिक समृद्ध और गतिशील बनाने में भी होगा।

गहमरी जी के गीतों मे सहज आकर्षण है। इनके छंदों मे बहुप्रचलित और सरल भाषा का प्रयोग है, इससे भोजपुरी की व्यापकता को अधिक बल प्राप्त होने की सम्भावना है। भोजपुरी साहित्य की उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए यह पुस्तक एक कड़ी होगी, हमे विश्वास है।

चंडीगढ़
११ नवम्बर '६४

[signature]

आभार :

'बयार पुरवइया' की भीनी-भीनी गंध, प्रकृति को दुलारती हुई आगे बढ़, मैदानों और गांवों में जब गुन-गुना उठती है, तभी अपने उस आंचल के धरती-पुत्रों का मन-मयूर पिहँक उठता है। आज वही गंध, वही रस और उसी की गुनगुनाहट, कविता-कुञ्ज के रूप में अपने नये पल्लवों एवं पुष्पों के साथ आपके सम्मुख है।

भावुकता मानव जीवन का एक विशिष्ट अंग है। मानस-पटल पर अनेकानेक भाव चित्रित होते रहते हैं और उनका एक ऐसा प्रभाव पड़ता है, जिसके फल स्वरूप उन संचित भावनाओं का प्रकाश समय-समय पर लेखनी, स्वर अथवा तूलिका द्वारा अवश्य होता रहता है। यह पुस्तक भी उन सुमधुर भावनाओं का प्रकाश है जो बिना किसी आमंत्रण के अनायास ही प्रस्फुटित होते रहे हैं।

मुझे आज भी स्मरण है, जब वर्मा तथा सिंगापुर के अपने उस सात-आठ वर्ष के निवास काल में अपनी शस्य-श्यामला भारत भूमि की मधुर परिकल्पना में कभी-कभी आत्म विभोर हो उठता और तब मन, इस स्वर्णिम धरा की प्रशंसा में भीतर ही भीतर गुन-गुना कर रह जाता। स्वदेश लौटने पर वे ही कल्पनायें साकार हो धीरे-धीरे गीतांकुर बन, एक-एक कर उगने लगीं। कई वर्षों तक मेरा प्रयास (खड़ी भाषा) हिन्दी में ही चलता रहा। तब तक मेरा सम्पर्क तथा घनिष्ठता प्रयाग के कुछ साहित्यिक मित्रों से अत्याधिक हो चली और उनके कुशल परख ने मुझे अपने आंचलिक भाषा 'भोजपुरी' में भी कुछ न कुछ लिखने की सलाह दी, जिस पर मैंने विचार करके उनकी

इस नेक सलाह को स्वीकार किया और आज मै सचमुच उनसे स सर्वश्री अंजनी कुमार तिवारी 'दृगेश' भाई युक्तिभद्र दीक्षित तथा हर्ष प्रियदर्शी का विशेष आभारी हूं जिन्होंने मेरी लेखनी को अपने ही मे कुछ ढूंढ-निकालने के लिए प्रेरित किया। भाई 'दृगेश' ने जिस आत्मीयता के साथ मुझे अपने कार्य-दिशा का ज्ञान कराया, वह सचमुच मेरे लिये एक निधि सी ही लगी।

मैंने इस (पचपन गीतों के) संकलन में भरसक सभी वातावरण को छूने का प्रयास किया है। मेरा सदैव से ही यह ध्येय रहा है कि गीत अधिक लम्बा न लिखूं। विशेषतया किसी भी लोक-भाषा मे काफी लम्बे गीत न कोई गा पाता है, न किसी को याद रहता है और न वह गीत लोकप्रिय ही हो पाता है। छोटे-छोटे गीतों मे सुन्दर भावनाओं का समावेश जितना हो पाता है, वह अधिक लम्बे गीतों मे नही। कभी-कभी कवि-सम्मेलनों में तथा आकाशवाणी से भी कविता पाठ करने का अवसर प्राप्त होने पर मैंने देखा है, समय की दृष्टि से छोटे-छोटे गीत ही विशेष उपयुक्त सिद्ध हो पाते हैं। वैसे मेरा यह अपना विचार है और अपना ही अनुभव।

'बयार पुरवइया' के गीतों में मैंने भोजपुरी शब्दों का ही प्रयोग किया है। वैसे तो यह आज भी एक विवाद का ही विषय है कि सही मानों मे भोजपुरी क्षेत्र कौन और कहाँ तक है? फिर भी इतना तो सत्य है ही कि थोड़ी-थोड़ी दूरी पर ही बोल-चाल की भाषा में अन्तर पड़ता जाता है। इस दृष्टिकोण से सम्भव है मेरी अपनी भाषा के किन्हीं शब्दों से किसी का मत भिन्न हो उठे। भोजपुरी की व्यापकता को दृष्टि में रखते हुए मैंने भरसक क्लिष्ट शब्दों का भी प्रयोग नही होने दिया है। यों 'बयार पुरवइया' आपको कहाँ तक शीतल, मंद, सुगंध पहुँचा सकेगी, मैं नहीं जानता।

साहित्यिक जीवन में नित्य नूतन सृजन करते रहने में प्रोत्साहन का एक प्रमुख स्थान रहा है। वह भी विशेषतया उनके लिए जो पद्यों की रचना करते रहे हों। मैं उन महानुभावों को आज कैसे भुला सकूँगा जिन्होंने समय-समय पर मुझे भी प्रोत्साहित कर आगे बढ़ने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। विशेषतः मैं सर्वश्री नर्मदेश्वर-चतुर्वेदी, ठा० विश्वनाथ सिंह, 'राहगीर बनारसी' और जगदीश ओझा 'सुन्दर' आदि का आभारी हूँ, जिनसे मुझे बड़ा बल एवं प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा है। साथ ही प्रयाग की साहित्याराधना केन्द्र 'नव-प्रभात' के सभी मित्रों एवं सदस्यों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जिनका प्रत्येक सहयोग तथा उनकी शुभकामनायें सदैव मेरे साथ रही हैं।

'बयार पुरवइया' के प्रकाशन कार्य में अपना अमूल्य समय देने तथा सभी साधनों को उपलब्ध कराने मे सर्वश्री भाई नोखेलाल सोनकर, श्री नरेशचन्द्र भार्गव बन्धुवर श्रीधर शास्त्री, भाई महेश कुमार शर्मा आदि का मैं बहुत कृतज्ञ हूँ। साथ ही इस संकलन के प्रकाशक श्री ओऽम् प्रकाश केला जिन्होंने इस पुस्तक को यह रूप दिया, मै हृदय से उनके प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ। अंत मे मै पूज्य आचार्यप्रवर डॉक्टर हजारीप्रसाद जी द्विवेदी का अत्यधिक ऋणी हूँ जिन्होंने अपने सहज भाव से इस पुस्तक के प्रति अपना विचार प्रकट किया है। उनकी सुझायी हुई कुछ बातों पर मैंने विशेष ध्यान दिया है, जो सचमुच मेरे लिए अमूल्य हैं।

भोलानाथ 'गहमरी'


पिता जी के चरणों में सादर

• अगम राह निबुकइह

प्रभु जी, हमरो सुरतिया
नाही बिसरइहऽ । प्रभु०

लोग कहे तू बहुत दयावन,
लामी बाँह तोहार,
चिउँटी से हाथी तक सुनलीं
तूँ ही तऽ रखवार,
दीन जानि हमरी बेरिया जनि,
आपन नजर फिरइहऽ । नाहीं०

ऊँच - नीच के भेद ना तोहरे,
कबहीं भइल दरबार,
राजा हो चाहे फकीर हो
सबके खुलल दुआर,

फिर काहें आदिमी, आदिमी से,
भेद करे समुझइहऽ। नाहीं०

भरमल जियरा एक-एक के,
सब तऽ इहाँ गँवार,
पाप - पुन्न के भेद न जानें
माँगे सरन तोहार,

पार लगइहऽ कठिन जिनिगिया,
अगम राह निबुकइहऽ। नाहीं०



लामी = लम्बी। बिसरइह = भूलना। फिरइह = फेरना। भइल = हुआ। दुआर = द्वार। समुझइह = समझाना। लगइह = लगाना। जिनिगिया = जिन्दगी। निबुकइह = पथ देखाना, पार करा देना।

• मीले ना सँवरिया हमार

धरती अकास आजु मिले गरवा डार
कतही मीले ना सँवरिया हमार, सखिया !

थाके रहिया निहार दूनो अँखिया उघार
नाहीं आवे निरमोहिया हो मोरे रखवार
उठे जीयरा में पीर,
बरिसे नैनवाँ से नीर,
जइसे रिमि-झिमि बरिसे फुहार, सखिया ! कतही०

फूल बगिया बयरिया हो नाहीं महके
आजु मनवाँ के पनछी हो नाहीं चहके
जियरा लागे नाहीं मोर,
नेहियाँ पाये बिनु तोर,
जइसे बाजे बिनु तार ना सितार, सखिया ! कतहीं०

हँसि उठेला बिपतिया क आन्ही आ तुफान
मन डगमग डोले, आजु डोलेला परान
केहू होला ना हमार,
मीले नाहीं खेवनहार,
नइया बहे जइसे बिनु पतवार, सखिया ! कतहीं०

गरवा = गला। कतहीं = कहीं। बयरिया = पवन।
आन्ही = आँधी। परान = प्राण। केहू = कोई।

• डगरिया कइसे-कइसे कटिहें

डगरिया कइसे-कइसे कटिहें पंछी, नाहीं बूझे राम।

उड़त-उड़त तोर, पाँख थकेला,

सूना अकसवा मे तूँह-ई अकेला,

झर-झर दुःख क बयरिया बहेला,

बिपतिया कइसे केहू बँटिहें पंछी, नाहीं बूझे राम।

डगरिया कइसे०

पाँख निहारत दिन बिति गइलें,

अंत समय किछु काम न अइलें.

आपन, पर-उपकार न कइलें,

दुरदिन, कइसे केहू अटिहें पंछी, नाहीं बूझे राम।

डगरिया कइसे०

भोर पहर सुख लागत नीके,

ढुरकल दिनवाँ त परि गइलें फीके,

कबहूँ ना बोलेल, बोलिया तूँ 'पी' के,

उमिरिया दिन-दिन घटिहें पंछी, नाही बूझे राम।

डगरिया कइसे०

ऊँचे बिरिछिया क ऊँची पुलुइयाँ,

कबहूँ ना पंछी रे उतरत भुइयाँ,

छोड़ि गरूर अब जोरि लेहु नेहियाँ,

नगरिया एक दिन छुटिहें पंछी, नाहीं बूझे राम।

डगरिया कइसे०



कइसे-कइसे = कैसा-कैसा। तोर = तुम्हारा। थकेला = थकना।
तुहँई = तुम्हीं। केहू = कोई। गइलें = गया। अइलें = आया।
कइले = किया। अटिहें = साथ देना। ढुरकल = गिरता।
पुलुइयाँ = पेड़ की ऊपरी टहनी। बिरिछिया = बृक्ष। लेहु = लो।

• रहिया से राही बड़ी दूर

घेरि अइली बदरिया रयन अन्हियरिया,
कि, रहिया से राही बड़ी दूर ।

घेरे अन्हरिया, ना मिलत सवेरा,
सूझे ना नयना, ना मिलत बसेरा,
कंकर-काँट से भरली डगरिया,
कि, पग ना परत भरपूर ।
रहिया०

जाये के बहुत दूर राही अनारी,

लरखत पाँव डगरिया में भारी,

ना पहिचनली ना जनली डगरिया,

कि, नाहीं गियान नाहीं लूर।

रहिया०

ना केहू मीत, ना मिलल सहारा,

मनवाँ बेबस आजु, जइसे अभागा,

पीया मिलन की, छुटलि डगरिया,

कि, टूटलि तोहरो गरूर।

रहिया०

बहत बयार, जिया झकझोरे,

भरमत जियरा संवरिया के फेरे,

अंत न सूझलि तोहरी डगरिया,

कि रहल नयनवाँ में धूर।

रहिया०



लरखत - डगमगाना। जनली = जाना हुआ। केहू = कोई।
गियान = ज्ञान। लूर = ढंग। धूर = धूल।

• लागल चुनरिया में दाग

कइसे लागल चुनरिया मे दाग,

बलमुवाँ पूछे न राम । कइसे०

सरजू में धोवली, गंगा में धोवली,

धोवली जमुनवाँ के तीर,

निसनियाँ छूटे न राम । कइसे०

नइहर में पुछली, ससुरवा में पुछली,

सखि, तूँ ही बता दे उपाय,

बहनवाँ सूझे न राम । कइसे०

सास-ननदिया त बूझही न पइहें,

सखि, जियरा लागल डर एक,

बलमुवाँ बूझे न राम । कइसे०

कइसे लागल चुनरिया में दाग,

बलमुवाँ पूछे न राम । कइसे०



कइसे = कैसे । नइहर = माँ का घर । बहनवाँ = बहाना ।

• बिरहो रतिया डँसे

बिरही रतिया डँसे,
हाँ, बिरही रतिया डँसे।

पाँच हवेली रहत अकेली
बीतलि जाय उमरिया,
बाहर भीतर नींदो न लागे
काटेले मोहि सेजरिया,

बूझेला नाहिं पिया परदेसी,
कवनी देश बसे।
बिरही रतिया डँसे॥

साँझ सवेरे बाट निहारीं
सोरहो सिंगार सँवारि,
सगरी रात बेकल अँखिया मे
निरखीं ठाढ़ दुआरे,

पास-परोसिया ताना मारे
लोगवा देखि हँसे।
बिरही रतिया डँसे ॥

बाट जोहत अँखिया पथराइलि
बिरिथा भइलि जवानी,
पहिरल एक बिअहुती चुनरिया
अब त भइलि पुरानी,

बरिसेला नयन दरस बिनु बालम,
कहवाँ जाइ फँसे।
बिरही रतिया डँसे ॥

*

बितली = व्यतीत होना। काटेले = काटना। बूझेला = समझना।
कवनी = कौन। सगरी = सब। ठाढ़ = खड़ा रहना।
बिअहुती = शादी के समय का। त = तो। भइलि = हुई।

बरखा बहार



• बदरा असाढ़ के

सिकरिया खनकि उठल भिनसार
कि धनि-धनि खोल-ऽ ना केवार
आजु घर आइल हँसत असाढ़ ।

बीति गइल दिन कठिन बिरह के
जियरा उठल हुलास,
घनन्-घनन्-घन् ताल - ताल पर
बाजन बजल अकास,
हँसि-हँसि कइलसि राति-राति भर
धरती नया सिंगार ।
आजु घर०

सतरंगी गोटदार चुनरिया
चुरिया लहरदार,
रहि-रहि चमके माथ टिकुलिया
झुमका नकपदार,
अब ना निकसे लोर नयन मे
कजरा पहरेदार।
आजु घर०

चंचल भइल पाँव के बिछुवा
मेंहदी के मुँह पान,
नेह पाइ बिरवा अँकुराइल
बगिया करे गुमान,
निहुरि-निहुरि भुंइ माथ बदरवा
चूमे सौ-सौ बार।
आजु घर०

सोन्ह-सोन्ह महकल अँचरा में
पाहुर दिहल पिया क,
खोले भेद पवन पुरवइया
नेहियाँ भरल हिया क,
मन क-ऽ जरल चिराग, राग सुनि
बदरा के मलहार।
आजु घर०

इस

बून-बून मोतियन के चुनि-चुनि
नदिया गूँथे हार,
हिलि-मिलि भेंटे ताल-तलइया
देइ गरवा अँकवार,
दूर ठाढ़ मुसुकाइ सवनवाँ
उमड़लि देखि पियार ।

आजु घर०

टूटि गइल निनियाँ माटी क
चमकल नया अँजोर,
बुनियाँ संग पसीनवाँ टपके
एक साँवर एक गोर,
झूमि उठल मेहनत क बाँह में,
धरती के रखवार ।

आजु घर०



सिकरिया साँकल । धनि-धनि = हे प्रिये । हुलास = प्रसन्नता ।
टिकुलिया = बिंदिया । लोर = आँसू । भइल = हुआ । निहुरि = झुकि ।
भुँई = धरती । माथ = मर । अँकवार = गले से गले मिलना ।
पियार = प्यार । निनियाँ = नींद । ठाढ़ = खड़ा । गइल = गया ।

• बदरा ले जा सनेस

बदरा एतनी कहल मोरा करिहऽ। बदरा०

जवने हि देसवा पिया मोरा होइहें,
रिम झिमि जाइ बरसिहऽ।
बदरा०

बीते असाढ़ सावन बर आवे,
बैरिन बुनियाँ हो बिरहा जगावे,
हमरी याद दिअइहऽ।
बदरा०

कठिन कठोर निरमोहिया क जियरा,
सुधिया जो आवे मोरा भींजि उठे कजरा,
मोतियन नीर देखइहऽ ।

बदरा०

अन जल अउरी सिंगार भइलें सपना
सरकि उठल मोरा हाथे क कंगना,
सगरी बात बतइहऽ ।

बदरा०

केतना कही तोसे चतुर सयाने,
मानें त मानें पिया जो न मानें,
त, गरजि बरसि समुझइहऽ ।

बदरा०



करिह = करना । जवने = जिस । दिअइह = दिलाना । एतनो = इतना । अउरी = और । भइले = हुआ । सरकि = ढीला होकर गिरना । त = तो ।

• बरखा बहार

मगन मन आइल बरखा बहार । मगन०

ऊंचे अकसवा में बाजन बाजे,
आवे बदरवा बिदेसवा से आजे,
खोलति धरती दुआर;
मगन मन आइल बरखा बहार ।

परत फुहार जुड़इली तपनियाँ,
रिमि-झिमि चुनियाँ पर चढ़ली जवनियाँ,
जेंव-जेंव ढरके असाढ,
मगन मन आइलि बरखा बहार ।

बाग बगइचा क मन हरियाइल,
तपती धरतिया क जियरा जुड़ाइल
शीतल भइली बयार,
मगन मन आइल बरखा बहार।

छम-छम बुनियाँ क पायल बाजे,
घुमरि-घुमरि पुरवइया नाचे,
नाचत जियरा हमार,
मगन मन आइल बरखा बहार।

उमड़ति नदिया क नेहियां फफाइलि,
परत-परत परती जे अघाइलि,
डुबि गइलें सबसे जवार,
मगन मन आइल बरखा बहार।

हरि-हरि चुनरी पहिरि फहरावे,
जल दरपन, मुंह मगिया सजावे,
सजि गइलें सोरहो सिंगार;
मगन मन आइल बरखा बहार।



टरके = उतरे। अकसवा = आकाश। जुड़इली = ठंडा होना।
तपनिया = गर्मी। जेव-जेव = जब जब। फफाइलि = उफान आना।
अघाइलि = तृप्ति पायी। जवार = आस-पास का इलाका।
भइली = हुई। आइल = आया।

• सावन भादों

सावन मास बहे पुरवइया
भादों बरीसे घनघोर रे,
हँसत खेलत भुंइ केसिया सँवारे
उड़ेला अँचरवा क छोर रे।

भरि गइली जलवा से सुखली तलइया
नदिया में उठेला हिलोर रे,
फर-फर फरकेला धरती क अंग-अंग
लहरेला धनवाँ क पोर रे।

बरिसे बदरिया, डगरिया ना सूझे
मिले ना बटोहिया के ओर रे,
काँपि उठे बिरही क मनवाँ अंगनवाँ
सुनि के बिजुरिया क सोर रे।

रहि-रहि चितवेली गोरिया अकेली
कंता बिदेसवा के छोर रे,
ठाढ़ी दुअरिया से चारुँ ओर निरखेली
टपके नयनवाँ से लोर रे।

बगिया मे बोलि उठे कारी रे कोइलिया
नाचि उठे बनवाँ में मोर रे,
हरी-हरी चुनरी मे धरती जे सहमेले
जइसे उमिरिया के थोर रे।

पनियाँ भरन बदरा गइलें पनिघटवा
बेलमत देखि चित चोर रे,
नेहियाँ क जलवा ले भरलें घरिलवा
लगली पिरितिया क डोर रे।

*

गइली = गई । जलवा = जल । जइसे = जैसे ।
थोर = थोड़ा । घरिलवा = घड़ा । पिरितिया = प्रीति ।

• चमके जिनिगिया में भोर

घिरि-घिरि आवे आजु बदरिया
पवन बहे पुरवइया रेऽ,
रहि-रहि मोरा जियरा डोले
बोले ता-ता थइया,
गोरी; चमके जिनिगिया में भोर।

आज मोर मनवाँ के गोकुल
कान्हा देखि लोभावे रेऽ,
राधा के संग लागे केहू
बंसी दूर बजावे,
गोरी; आजु मोरा जियरा विभोर।

असरा के दुइ पंछी नाचें
मनवाँ हँसि - हँसि गावे रेऽ,
उड़ि-उड़ि अँगना कागा बोले
परदेसी घर आवे,
गोरी; झाँके रे दुअरिया कि ओर।



जिनिगिया = जिन्दगी। असरा आशा। झाँके = देखना। दुअरिया = दरवाजा।

• बदरा बरिसे झूम के

करत बिरह बरजोरी, बदरिया बरिसलि हो,
दुअरे चन्दनवाँ की गाँछ, बयरिया महँकलि हो।

बहे पुरवइया बयार
घिरेले घन सावन के,
झिरि-झिरि परेले फुहार
त सुधि बिसरे तन के,

टूटलि धिरिजा के तार, बिजुरिया जे चमकलि हो,
देखि के अकेले बरवा मोहे, रयन आजु बिहंसलि हो।

की तोर बदरिया डगरिया भुलइलें
कि भटकेलू हो,
किया तोरा पिया परदेस
नयन नीर ढारेलू हो।

ना मोरा बिरही रे पिया परदेस, डगरिया ना भटकलि हो,
भरलीं सगरवा से नीर, गगरिया छलकलि हो।



धिरिजा = धीरज, सतोष। रयन = रात। तोर = तुम्हारा।
भुलइले = भूलना। भटकेलू = रास्ता भटकना।
ढारेलू = बहाती हो। सगरवा = समुद्र।

• निंदिया खुलि-खुलि जाय

पी-पी रटेला पपिहरा, जियरा डोलि-डोलि जाय।

सावन परत फुहार,
बदरा गावे मलहार,

गोरी, थिरिके बिजुरिया, निंदिया खुलि-खुलि जाय।
पी-पी रटेला०

भादो बरिसे बदरिया,
तेहु पर घोर अन्हियरिया,

सुधिया आवे परदेसी, कजरा धुलि-धुलि जाय।
पी-पी रटेला०

डूबे खतवा कियरिया,
नदिया भेंटेले पोखरिया,

दइया, सूझे ना बटोहिया, रहिया भूलि-भूलि जाय।

पी-पी रटेला०

नाचे तलवा मछरिया,
मेघा गावेला कजरिया,

झिंगुरा बीन झनकारे, मनवाँ बलि-बलि जाय।

पी-पी रटेला०

तन-मन धरती जुड़ाइलि,
पात-पात अगराइल,

रहि-रहि पुरुवा बयरिया, बेनियाँ झलि-झलि जाय।

पी-पी रटेला०



अन्हियरिया = अंधेरा। तेहु पर = तिस पर। कियरिया = खेत की क्यारी।
भेंटेले = गले मिलना। अगराइल = प्रसन्न हुआ। बेनियाँ = पखा।

डोले सरद बयार

विहँसत आइल दिन उजियार,
यार अब डोलति सरद बयार ।

बीति गइल दिन बर - बरखा के
वगिया भइलि उदास
बदरा गइल बिदेस रात भर
सिसिके नील अकास
जस-जस टपके लोर नयन से,
धरती लेइ संवार ।
यार०

बिखरल मोती पात-पात पर
टहकि फुलाइल कास,
फूललि डोर अकास-बँवर के
कनइल भरल सुवास,
अगराइल मन हर-सिंगार के
महँकि उठल भिनसार।
यार०

गह-गह उगल कँवल जल उपरा
हँसि-हँसि करे किलोल,
रीति न जाने प्रीति भँवरवा
लेइ रस जाला डोल,
देखि-देखि मन बिहँसे मछरिया,
अइसन झूठ पियार।
यार०

अमिरित परल धान के बाली
चमकल नया बिहान,
मूँगा-मोती जड़लि जोन्हरिया
बजरा भइल जवान,
झूमि उठलि मदमातलि उखिया
पोर पोर रसदार।
यार०

उतरलि आजु सरग धरती पर
सजलि सुहागिन रात,
कल - कल नदिया गीत सुनावे
तरई चलति बरात,
टह - टह रैन अँजोरिया टहकल,
बहकल जिया हमार ।
यार०

फिर से मिलल प्रान दियना के
दूर भइल अन्हियार,
आइल सुघर सुदिन अगहन के
डोली परल ओहार,
चलति गुजरिया बालम के घर,
झूमत चलल कँहार ।
यार०



उजियार = उज्ज्वल, साफ । गइल = गया । भइलि = हुई । लेइ = लेकर ।
अगराइल = प्रसन्न हुआ । उगल = उगा । अइसन = ऐसा । पियार = प्यार ।
अमिरित = अमृत । परल = पड़ा । सरग = स्वर्ग । सजलि = शृंगार किया ।
अँजोरिया = चाँदनी रात । ओहार = डोली के उपर का पर्दा ।

• आइल सरद मुसुकात

सरद - रितु आइल मन मुसुकात ।

अब त भइल आजु सूना अकसवा,
ना त पनिहारिन ना ऊ पनिघटवा,
अब नइखे गगरिया भरात,
सरद - रितु आइल मन मुसुकात ।

लहरति नदिया क जियरा थिराइलि,
अन्हियाँ औ पनियाँ क गरमी भुलाइलि,
सिहरे बिरिछिया क पात,
सरद रितु आइल मन मुसकात ।

रतिया डुबलि आजु दुधवा के रंग में,
नाचे चनरमाँ धरतिया के संग में,
अमिरित बरिसेले रात,
सरद रितु आइल मन मुसुकात ।

ताल - तलइया क निरमल जलवा,
झाँकेला भौंरे कमलवा क फुलवा,
जल की मछरिया डेरात,
सरद रितु आइल मन मुसुकात ।

सोहेला धरती पर कासे क फुलवा,
पंखिया पसारे हो जइसे बगुलवा,
खंजन की बोलिया सोहात,
सरद रितु आइल मन मुसुकात ।

चम - चम मटिया क चमके भवनवाँ,
गउवाँ क गोरिया, लिपावें अंगनवाँ,
लाखन् दियरिया बरात,
सरद रितु आइल मन मुसुकात ।



आइल = आया । भइल = हुआ । अकसवा = आकाश । नइखे = नहीं ।
अन्हियाँ = आँधी । थिराइल = स्थिर हुआ । भुलाइलि = भूल जाना ।
बिरिछिया = वृक्ष । अमिरित = अमृत । पसारे = फैलाना ।
लिपावे = गोबर मिट्टी से आँगन पोतना । दियरिया = दीप ।

• जागलि धरती के भाग

बरि उठे दियना, बिहँसि उठे अँगना,
जागलि धरती के भाग ।

बरिस - बरिस पर लवटल दिनवाँ,
बूझलि बिरहा क आग,
केतनो अमवसा के घिरली अन्हरिया
कि चम - चम चमके सुहाग ।
जागलि०

आजु सरग मे उतरलि जोती
लिहलें चनरमाँ बिराग,
नाचि उठलि अब धरती के कन-कन
हँसि उठें सेस हो नाग ।
जागलि०

पाहुन अइसन बनि ठनि आइल
बन्हले पियरिया के पाग,
एकहि रतिया के आव - भगत में
लाखन बरेला चिराग ।
जागलि०

सब सखियन मिलि अरती उतारेली
गावेली प्रीति के राग,
गंगा - जमुनवाँ औ लछिमी मनावेली
लागे ना सेनुरा में दाग ।
जागलि०

माटी क दियना सनेहिया क बाती
तेलवा भरल अनुराग,
केतने मिलनुवाँ निछावर भइलें
खुलि गइलें केतने के भाग ।
जागलि०

मिलि लेहु, मिलि लेहु बारी रे सनेहिया
हिरदया क लिहले पराग,
होत भिनसहरा सपन होइ जइहे
जोरि लेहु नेहियाँ क ताग ।
जागलि०



लवटल - लौटा । पाहुन = रिस्तेदार । अइसन = ऐसा । आइल = आया ।
बन्हले = बाँधकर । पियरिया = पीला वस्त्र । केतने = कई ।
मिलनुवाँ = प्रेमी । जोरि लेहु = गाँठ बाँधना । ताग = डोरी ।

• बसंती बयार

बसन्ती, हँसि - हँसि डोले बयार,
फगुनवाँ झूमत आवे दुआर ।

सोनवाँ फुलिल सरिसोइया के बिरवा,
महँकि उठलि दुनो नदिया के तिरवा,
उमड़लि रसवा के धार । बसन्ती०

मोजरत अमवाँ पर चढ़ली जवनियाँ,
पाते-पाते जड़लि हो जइसे रतनियाँ,
झूँके लागलि भरवा से डार । बसन्ती०

मातलि रस से गुलबवा कि कलिया,
भोरही जगावे भँवरवा कि बोलिया,
सुधि-बुधि बिसरें निहार । बसन्ती०

हँसत खेलत हरिअइली धरतिया,
गेहुँवाँ के पोरे - पोरे लहरे पिरितिया,
जलवा में लहरे सेवार । बसन्ती०

भरि उठे रसवा से रसे - रसे बगिया,
बनवाँ मे फुलवा फुले हो जइसे अगिया,
फुलि गइलें सेमरा अँगार । बसन्ती०

सजलि सुघर जइसे नयकी बहुरिया,
भरि-भरि अँखिया क निरखे पुतरिया,
धरती क सोरहो सिंगार ।
बसन्ती हँसि - हँसि डोले बयार ।



दुआर = दरवाजे पर । सरिसोइया = सरसों । तिरवा = किनारे ।
मोजरत = आम में बौर लगना । जड़लि = जड़ा हुआ । रतनियाँ = रत्न
भरवा = बोझ । भोरहीं = सुबह । हरअइली = हरी हुई ।
बहुरिया = वधू । पुतरिया = आँख की पुतली । सोरहो = सोलहों ।

• गुलाबी लहरा

चोरी - चोरी चाँदनी मे चिटिके गुलबवा,
होत भिनसहरा, भँवरवा के पहरा।
चोरी०

डूबेले रतिया, पवन रस घोरे,
चितवेले कलिया नयनवाँ के कोरे,
भोले बटोहिया बिसरि गइलें डगरा,
होत भिनसहरा भँवरवा के पहरा।
चोरी०

माथे पर सोहे पँखुरिया के अँचरा,
सोहे लाल फुलवा मे करिया क भँवरा,
जइसे हो गोरिया के नयनन् मे कजरा,
होत भिनसहरा भँवरवा क पहरा।

चोरी०

छलकेले रसवा के लाली गगरिया,
जियरा डोलावे बेदरदी सँवरिया,
तन - मन डोलावे पुरवइया क लहरा,
होत भिनसहरा भँवरवा के पहरा।

चोरी०



गइलें = गया। डगरा = पथ। भिनसहरा = प्रातःकाल।
भँवरवा = भ्रमर। माथे = सर। जइसे = जैसे। नयनवाँ = नैन।

• बोलि उठे कोइलरिया

आधी - आधी रतिया, बोलेले कोइलरिया,
चिहुँकि उठे गोरिया, सेजरिया मे ठाढ़ । चिहुँकि०

अमवाँ मोजरि गइलें, महुआ कोचा गइलें,
मोरे बिरहिनियाँ क, निदिया भोरा गइलें,
रहि - रहि नेहियाँ क, बहली बयरिया,
खुलन लागे सुधिया क, दिहली केवाड़ । चिहुँकि०

फुलवा फुला गइलें, भँवरा लुभा गइलें,
कवने कसुरवा से, पीया घरे ना अइलें,
लिखि - लिखि पतिया, पठवलीं बिपतिया,
बहन लागे रतिया, नयन जलधार । चिहुँकि०



कोइलरिया = कोयल । मोजरि = आम में बौर आना । गइलें = गया ।
भोरा गइले = भूल गया । नेहियां = प्रीत । बहली = बहे ।

• कवना बने बाजेले

कवना बनें बाजेले बँसुरिया, हो रामा —
कवना बने बाजेले । कवना०

एक अधर, घर - घर सुनवइया,
वृन्दावन बाजेले बँसुरिया, हो रामा—
कवना बने बाजेले । कवना०

जात रहीं हम, बँसिया क धुनि सुनि,
के हो मोरा रोकेला डगरिया, हो रामा—
कवना बने बाजेले । कवना०

साँकरि गलिया, साँवर रंग छलिया,
ऊहे मोरा रोकेला डगरिया, हो रामा—
कवना बने बाजेले । कवना०

★

कवना = किस । सुनवइया = सुननेवाला ।

• कवने रंग फुलवा फुलइलें

कवने रंग फुलवा फुलइलें, हो रामा—
ओही फूलबगिया में। कवने०

हरि-हरि पतिया, पातर लागे डरिया,
लाल रंग फुलवा फुलइलें, हो रामा—
ओही फूलबगिया में। कवने०

ओही फुलबगिया मलिनियाँ क पहरा,
के हो-ऽ देखि फुलवा लोभइलें, हो रामा—
ओही फूलबगिया में। कवने०

गुन-गुन बोलिया, भौंवर रंग छलिया,
ऊहे देखि फुलवा लुनइलें, हो रामा—
ओही फूलबगिया में। कवने०



पतिया = पत्ती। पातर = पतली। ओही = उसी।
के हो-ऽ = कौन। ऊहे = वही।

• अगिया बहल बयार

अमवाँ मोजरि गइलें बोले कोइलरिया,
कि पनछी करे हाँ विहार ।
झूले टिकोरवा जइसे गोरी के झुलनियाँ,
कि लोभि गइलें जियरा हमार ॥

उतरल फागु चढ़ल रे चइतवा,
कि भँवरा करेला गुँजार ।
होत भिनसहरा फुलइलें गुलववा,
कि फुलि गइलें सेमरा अँगार ॥

रसे-रसे बगिया से डोलेले बयरिया,
कि महुवा चुवेला रसदार ।
चर-मर अँसवा के भेंटे बँसवरिया,
जइसे चिटिया भेंटेले अँकवार ॥

बढ़े लागलि रहि-रहि दिन के तपनियाँ,
कि अगिया बहेले हो बयार ।
तलफेला जियरा ना मिले हो सरनियाँ,
कि डोलि उठे बेनियाँ हजार ॥

तलवा क जलवा जरेला तलहटिया,
कि नदिया छोड़ेले हो कगार ।
दिन-दिन फाटे लागलि धरती क छतिया,
कि धरती में परेला दरार ॥

भुँइया क धुरिया उड़ेले चहुँओरिया,
कि फूटि उड़े फरवा मदार ।
धरती पर लहरे जवासे क बिरवा,
कि जलवा में लहरे सेवार ॥

बेकल भइल जीव बिनु जल के,
कि परसें महिनवाँ असाढ़ ॥

*

गइले = गया । कोइलरिया = कोयल । टिकोरवा = आम का प्रारम्भिक फल ।
जइसे = जैसे । तपनियाँ = तप्ती धूप । अगिया = आग । सरनिया = शरण ।
भुँइया = धरती । फरवा = फल । भइल = हुआ ।

• धरती करे पुकार रे

कारन कवन सरद रितु रूसल, जाके बसल पहार रे,
तपलि जेठ की कठिन तपनियाँ, धरती करे पुकार रे।

उठलि उठानी अइसन दिन-दिन
लहरे सुरुज किरिनियाँ,
अइसन तपन तपलि दिन-रतिया
धधके आगि जमिनियाँ,

तलफि-तलफि पग धरे बटोही, चले न पावे पार रे। धरती०

भइल तपसिया आजु किसानी,
तर-तर चुवे पसिनवाँ,
भींजि उठलि देहियाँ जइसे हो
बरिसल खूब सवनवाँ,

मिले न कतही तनिक सरनियाँ, घरवा अउरि दुआर रे। धरती०

सासत परलि पोखरिया रोवै
रोवै चेल्हि मछरिया,
खड़े-खड़े पनिहारिनि रोवै
भरे न पूर गगरिया,
पनियाँ जाई पताले ठेकल, भंखे लगल इनार रे। धरती०

सनन्-सनन् सन् बहे बयरिया
झर-झर झरे पतइया,
बगियन बीच कोइलिया हहके
हहके सोन चिरइया,
लागलि असरा बा जियरा मे, बरिसी मास असाढ़ रे। धरती०

तपन जात किछु देर न लागी
नाहक भइया रोना,
तपन-तपत कोइला भी चमके
बनिके एक दिन सोना,
जतनें तपन तपी जेठवा मे, अनजा उगी बधार रे। धरती०



पहार = पर्वत। कइसन = कैसा। किरिनियाँ = किरण। अइसन = ऐसा।
भइल = हुआ। तपसिया = तपस्या। कतहीं = कहीं। तनिक = थोड़ा।
सरनिया = शरण। अउरि = और। सासत कष्ट। चेल्हि = चल्हवा मछली।
ठेकल = छू लिया। इनार = कुआँ। पतइया = पत्ती।

• मन के सुगना

सखि रे कवने बनवाँ,

डोले मन के सुगनवाँ। सखी रे०

माह असाढ़ बदरवा गरजे,

रिमि-झिमि सावन बरिसे,

टपकत भादो राम मड़इया,

अँचरा से टपके नयनवाँ। सखी रे०

सीतल भइल कुआर अँजोरिया,
जगमग भइल कातिकवा,
अगहन मास जिया मोरा कसके,
पीया नाही माँगेला गवनवाँ। सखी रे०

पूस पियासल प्रान पिया बिनु,
माघ सतावत पाला,
फागुन हँसि-हँसि फाग मनइती,
रहती जो पीया के भवनवाँ। सखी रे०

चइत मास अमवाँ मोजराइल,
सूखल दिन बइसखवा,
तपलि जेठ मे हेठ धरतिया,
कल नाही एकहू महिनवाँ। सखी रे०



कवने = किस। भइल = हुआ। पियासल = प्यासा।
मनइइतीं = मनाना। रहतीं = रहना। बइसखवा = वैसाख।

• देसवा में बिहसेला भोर

आजु मोरा देसवा में बिहसेला भोर । आजु०

हमरो पसिनवाँ क झलकलि किरिनियाँ,
देसवा के पचरख में लागलि मसिनियाँ,
मचि गइलें जगवा मे सोर । आजु०

खेतवा में चम - चम चमकेला चानी,
पी - पी के जी भर नहरिया क पानी,
लहरेला धनवाँ क-ऽ पोर । आजु०

अब त बनलि आजु नई - नई सदिया,
चमके फसिलिया के माथे पर बिंदिया.
जियरा में उठत हिलोर । आजु०

तेज भइलैं हरवा औ कल करखनवाँ,
खनकलि अनाजे मे खेत खरिहनवाँ,
बरिसे पसिनवाँ के जोर। आजु०

हमरो सपनवाँ क झलकलि गगरिया,
तरवा में तैरैले नाचलि बिजुरिया,
घर-घर में दमकल अँजोर। आजु०

फइललि सडकिया के लामी-लामी बँहियाँ,
गउवाँ मे जोरे नगरिया क नेहियाँ,
माने ना पहिया के जोर। आजु०

ना केहू राजा बा ना केहू परजा,
अगिया लागलि हो महाजन क करजा,
सूखल नयनवाँ क लोर। आजु०

अपने हि रजवा मे आपन बा सासन,
बइठे के मीलल बराबर क आसन,
रतिया बीतलि घनघोर। आजु०



किरिनियाँ = किरण। मसिनियाँ = मशीन। गइले = गया। जगवा = जगत।
फसिलिया = फसल। भइलैं = हुआ। हरवा = हल। तरवा = तार।
गऊवाँ = गाँव। केहू = कोई। अगिया = आग। बीतलि = व्यतीत।

• देश के लाल

जाग-ऽ जाग-ऽ देसवा क सजग सबल लाल,
धरती करेले हो पुकार ।

जवनी धरतिया मे सोनवाँ उगवल-ऽ,
पवल-ऽ अमोल पियार,
अँखिया लागलि आजु कवनी बिदेसिया क,
धोखवा से कइलसि वार ।



अपना धरतिया के तुहू भइया पहरू
देसवा क सुनि ल ऽ गोहार
कान्हिया क लजिया बचइह-ऽ र बिरना
दुसुमन टाढ़ दुआर ।

ओहि रे दुअरिया पर शिव जी क पहरा
पारवती रखवार,
केतनो जे रतना हो सीस चढ़इहे कि
बचिहें ना कुल - परिवार ।

एक-एक जोधा इहाँ राम की मुरतिया
सत क गहे तरुवार,
बैरी जो चरन बढ़ाई एहि भुँइयाँ त-ऽ
लेइ लेइहे सीस उतार ।



पवल-ऽ = पाया । कवनो = किसका । कइलसि = किया । गोहार = पुकार ।
बचइह् = बचाना । ओहि = उसी । सव = सत्य । लेइहे = लेंगे ।

• मोर सिपाही हो

जब-जब देसवा पर
परली रे बिपतिया
मोर सिपाही हो-ऽ,
लजिया के तूँ ही रखवार। मोर०
बाप महतारी तेजल-ऽ
तेजल-ऽ तिरियवा
मोर सिपाही हो-ऽ
तेजल-ऽ तूँ घरवा-दुआर। मोर०
छोड़ि सुख-निंदिया भइली
तपनी जिनिगिया
मोर सिपाही हो-ऽ
चूमेले माटी लिलार। मोर०
मनवाँ गंगा जल लागे
गीता तोरी बोलिया
मोर सिपाही हो-ऽ
करतब अटल पहार। मोर०
धरती बचनियाँ माँगे
माँगेले जवनियाँ
मोर सिपाही हो-ऽ
माँगेले तोहरो पियार। मोर०
जीत बरदनवाँ तोहरो
मीत रे मरनवाँ,
मोर सिपाही हो-ऽ
चरन पखारी तोहार। मोर०

★

तेजल = त्याग किया। तिरियवा = स्त्री। करतब = कर्त्तव्य।

• भारती पुकारे

बेरि-बेरि हेरि आजु,
भारती पुकारे । बेरि-बेरि०

हर - हर गूँजेले
घर - घर बानी,
धनि - धनि देसवा के
धनि बलिदानी,
कोटि-कोटि जन - मन,
अरती उतारे । बेरि-बेरि०

नगर - नगर गाँव –
गाँव की दुअरिया,
हथवा थम्हावे बहिनी
ढाल — तरुवरिया,
रचि - रचि बिरना के,
पगिया सँवारे । बेरि-बेरि०

जय हो हिमालय
जय बिंध्याचल,
जय सरजू
जमुना - गङ्गाजल,
तन - मन - धन हम,
सब नेवछारे । बेरि-बेरि०



बेरि-बेरि = बार-बार । अरती = आरती । तरुवरिया = कृपाण ।
बिरना = भाई । पगिया = पगडी । नेवछारे = लुटाना, वारना ।

धनि-धनि धरती हमार

धनि - धनि देसवा क धनि रे धरतिया,
परनवों से अधिकी बा हमके पियार। परनवों०

गंगा, जमुनवाँ के अँचरा में मँहके,
सोनवाँ के दनवाँ नयनवाँ में चमके,

जहवाँ के महके हो सोन्ही-सोन्ही मटिया,
सरगवा से रतिया में, बरिसे बहार। परनवों०

लुहिया मे लड़ली सरदिया से जुझली,
बरखा के पनियाँ नहरिया से बन्हली,
अपनो बिकसवा, अकसवा चढवली,
कवन पापी हमरा मे, खइलसि खार। परनवों०

खार जो खइहें रामा, रार मचइहें,
हमरी अजदिया में अगिया लगइहें,
ओही दुसुमनवाँ के हतबो परनवाँ,
करबि मुण्ड मलवा मे, शिव के सिगार। परनवों०

छल बल तजि वैरी अपना के समुझो,
हमरी तकतिया मे जिन केहू जूझो,
जऊ हम छन भर मे लँघलीं सगरवा,
पहरवा के लाँघत कवन पहार। परनवों०



धनि-धनि = धन्य-धन्य। परनवो से = प्राण से। अधिकी = अधिक। पियार = प्यार। सरगवा = स्वर्ग। कवन = कौन। खइलसि = खाया। तकतिया = शक्ति। जऊ = जब। लघलीं सगरवा = एक ही पग में समुद्र कूद कर पार किया। पहरवा = पर्वत। पहार = कठिन कार्य।

• बिंहसे अँजोरिया

देसवा के कोने - कोने बिहँसे अँजोरिया । देसवा०

हँसि के बिहँसि के पवन अगराइल,
युग से पियासलि आजु धरती जुड़ाइलि,
गाँवें-गाँवें साँपिन जइसे घूमेले नहरिया । देसवा०

देखि के बिकसवा, फुललि मोरी छाती
तेल बिनु दियना जरेला दिन राती,
घर - घर तरइन जइसे चमके बिजुरिया । देसवा०

हमरों ही सुखवा के चमके किरिनियाँ,
देसवा के पवरुख में लगली मसीनियाँ,
बीछि गइली रेखा जइसे लोहे की पटरिया। देसवा०

नगर - नगर लागे, कल - खरखनवाँ,
झूमि - झूमि नाचे आजु हमरो परनवाँ,
रहि-रहि छलकेले सुख की गगरिया। देसवा०



अगराइल = इतराया। पियासलि = प्यासी। जुड़ाइलि = तृप्त हुई।
पवरुख = पुरुषत्व। लगली = लगी। मसिनिया = मशीनें। गइली = गई।

• मजदूर, एक रूप

हम त सींक सलाई के।

चाहे तिनिका ही हम होईं,
फिर भी,
ई मति समझऽ,
ई मति भूलऽ,
कि, हमरी देहियाँ मे,
जलन बा बारूद के,
आँसू करिया बूँद के,
लेकिन, हर छन,
हम परतीक भलाई के।
हम त सींक सलाई के॥

हमकें घिरिणा से मति देखऽ,
हमें बेफिकिरी से मति फेंकऽ,
जब हम एक एकाई से ही,
दिया जलाईं,
चिता जलाईं,
लोह भसम करि-
खाक बनाईं,
फिर त रे भाई ! तब सोचऽ,
जेहि दिन एक साथ जलि जाइब,
त, समझऽ, प्रलय मचाई के ।
हम त सींक सलाई के ॥



त = तो । ई = यह । छन = क्षण ।
करि = करके । जेहि = जिस । जाइब = जायेंगे ।

• जिनिगी किसान के

हईं हम न किसान
सारी दुनियाँ के जान
नाहीं ऊँचका मकान
टूटी झोंपड़ी देखात बा।

टूटली बंसहटी खाट
ओढ़े के बा दरी-टाट
ढांकी जां लिलार
नीचे गोड़ ठिठुरात बा।

जाड़ा हो या पाला
नाहीं ओढ़ीला दुसाला
धोती कान्हीं पर तनाला
मोरा एही ले बिसात बा।

हाड़ छाती के देखात
पेट पीठी में समात
रात आँखी ना सुझात
सूखी खोपड़ी देखात बा।

फटली बेवइया बा
राति - दिन चलइया बा
फटली अंगुरिया ना
पनही समात बा।

खड़ी दुपहरिया में
सुखली परतिया में
तपती धरतिया में
गोड़ छनछनात बा।

तर - तर चुवेला जी
तन से पसीनवा
कि जइसे सवनवाँ
के बूँद टप - टपात बा।

नाहीं चयन जिनिगिया मे
बल ना सरीरिया में
सुख ना किसनियां में
दुख अफरात बा।

छोटी - छोटी बतिया में
रोजे कचहरिया मे
दाम ना कमरिया में
बिगहा बेचात बा।

घर मे घरनी पियारी
चुप्पे रहे मन मारी
जइसे आइल हो बिमारी
पड़लि सुधि से बेहाल बा।

लरिका माँगे जब खाना
रोइ करेली बहाना
साँझे आई घरे दाना
खरिहान मे दँवात बा।

देखि हलुवा मिठाई
नाही जीव ललचाई
रोटी, नून, मरिचाई
खाके जियरा जुड़ात बा।

दिने खेत खरिहान
राति सोवे के मचान
साँझ भइल या बिहान
नाही हमके जनात बा।

चाहे आगि बरिसे जेठवा में
ठार परे मघवा में
सब दिन खेतवा में
हरवा जोतात बा।

मन में उमंग जागे
लागे जो फसिलिया
कि हरिअर खेत देखि
जीया अगरात बा।

काटि पीटि के खुसी से
हम भइलीं सुखी से
अब जीये के दु-चारि दिन
के असरा जनात बा।

बाकिर चारि-चारि ममिला में
ब्याह-सादी कइला में
सालि भर के खइला में
करजा देखात बा।

ममिला के हरला से
सुदिया के भरला से
सेठ जी के करजा में
गल्ला तउलात बा।

नाही बाँचे एको दाना
भइल कइसन जमाना
आजु सब अन्न लेइके
अन्न-दाता ऊ कहात बा।

हम त हंउवीं किसान
करी केतना बयान
नाही जिनिगी मे मान
फिर भी जिनिगी देहात बा।

मानुख से हीन
जे बा प्यार सें बिहीन
आजु धरती से हीन
त किसान ऊ कहात बा।



बंसहटी = बाँस की बनी हुई। ढाँकी = ढंक कर। गोड़ = पैर। कान्हीं = कन्धे पर। बेवइया = पैर के तलवे मे दरारफटना। पनही = जूता। घरनी-पत्नी। पियारी = प्यारी। हरवा = हल, जिससे खेत जोता जाता है। फसिलिया = फसल। हरिअर = हरा। अगरात = इतराना। असरा = उम्मीद। बाकिर = लेकिन। ममिला = मोकदमा। खइला मे = खाने में।

• हमरो गाँव रे

काँट - कुस से भरलि डगरिया
धरी बचा के पाँव रे,
माटी उपरा छान्हीं छप्पर
उहे हमरो गाँव रे।

चान - सुरुज जिनिकर रखवारा,
माटी जिनिकर थाती,
लहरे खेतन बीच फसिलिया,
देखि के लहरेले छाती,

घर-घर सबकर भूख मेटावे,
नाहीं चाहे नाँव रे।
उहे हमरो गाँव रे।

चारूँ ओर सुहावन लागे,
निरमल ताल तलइया,
अमवाँ की डढ़िया पर बइटलि,
गावे गीत कोइलिया,

थकल बटोही पल भर बइठें,
आ बगिया के छाँह रे।
ऊहे हमरो गाँव रे।

सनन्-सनन्-सन् बोले बयरिया,
चरर्-मरर् बॅसवरिया,
घरर-घरर-घर मथनी बोले,
दहिया की कहतरिया,

साँझ-सबेरे गइया बोले,
बछरू बोले माँव रे।
ऊहे हमरो गाँव रे।

निकसें पनियाँ के पनिघटवा,
घूँघट काढ़ि गुजरिया,
मथवा पर धइ, चलें डगरिया,
दुइ-दुइ भरल गगरिया,

सुधिया आवे जो नन्दगाँव के,
रोवें सौ-सौ साँवरे।
ऊहे हमरो गाँव रे।

तन कोइला मन हीरा चमके,
चमके कलस पिरितिया,
सरल सोभाव सनेही जिनिकर,
अमिरित बासलि बतिया,

नेंह भरलि निसिकपटि गगरिया,
छलके ठाँव - ठाँव रे।
ऊहे हमरो गाँव रे।



भरलि = भरी हुई। छान्ही छप्पर = तिनके का छाजन। डढ़िया = वृक्ष की डाल। छाँह = छाया। कहँतरिया = दूध-दही रखने वाला मिट्टी का बर्तन। काढ़ि = निकाल। मथवा = सिर पर। धइ = रख कर। गगरिया = घड़ा।

• कहीं भींजे न कजरा

भींजे जो अँचरा त भींजे हो,
कहीं भींजे न कजरा। भींजे०

फुलवा चुनिय सखि, हार बनवलीं,
रचि-रचि मेंहदी मे हाथ रचवलीं,
सूखे मेंहदिया त सूखे हो,
कही सूखे न गजरा। भींजे०

ठाढ़ी दुअरिया केहू त समुझावे,
कौने कारन पिया आजो न आवे,
रूठे जो सुधिया त रूठे हो,
कहीं रूठे न जियरा। भींजे०

केसे कहीं सखि मनवाँ क बतिया,
बैरिन भइलि बिसवासलि रतिया,
घेरे अन्हरिया त घेरे हो,
कही घेरे न बदरा। भींजे०

भरलो हि नेहियाँ क छलके गगरिया,
बीतेले रतिया क पिछिली पहरिया,
टूटे तरइया त टूटे हो,
कही टूटे न असरा। भींजे०

✶

ठाढी = खडी। दुवरिया = दरवाजे पर। आजो = आज भी। जियरा = हृदय।
केसे = किससे। भइलि = हुई। विसवासलि = जिस पर भरोसा हो।
त = तो। भरलोहि = भरा हुआ। नेहिया = स्नेह। असरा = आशा।

• दरद न बूझे बेदरदी

दरद न बूझेला बेदरदी।

जा दिन पीया मोरा
धइलें अँचरवा,
छुटि गइलें माई-बाप
भइया के दुलरवा,
डोलिया लिअइलें मोरा बेमरजी।
बेदरदी०

रतिया ना पूछेला
बतिया जिया के,
कइसे समुझाईं
निरमोहिया पियाके,
जाने काहे भइलें आजु बेगरजी ।
बेदरदी०

रोज कहेला पिया
जायेके बिदेसवा,
सुनि-सुनि काँपे मोरा
आलहरो करेजवा,
एक नाहीं सूने पिया मोरी अरजी ।
बेदरदी०



बूझेला = समझता है । जादिन = जिस दिन । धइले = पकड़े । अँचरवा = आंचल ।
दुलरवा = प्यार । लिइअलें = ले आये । निरमोहिया = निष्ठुर । आलहरो = कोमल ।

• गायक से

सुनि - सुनि काँपि उठेला मोरा जियरा,
दरद भरलि तोरी गीत ।
गवइया ! दरद भरलि तोरी गीत ॥

सातों हि सुर से जनि तूँहुँ गइह,
सूतल जिया मोरा जनि तूँ जगइह,
हारलि बाजी पर जनि मुसुकइह,
कबहूँ त होइहनि जीत ।
गवइया ! दरद भरलि तोरी गीत ॥

मनवाँ क भँवरा रे निति उठि धावे,
उभराति कलिया मे नेहियाँ लगावे,
आखिर एक दिन बिरहा जगावे,
आजु भइलि परतीन ।
गवइया ! दरद भरलि तोरी गीत ॥

घायल जियरा कइलको न माने,
केहू मोरा आजु दरदियो न जाने,
दुरदिन मे हो केहू ना पहिचाने,
जगवा क अइसन रीत ।
गवइया ! दरद भरलि तोरी गीत ॥



सुर = स्वर । जनि = मत । तुहूँ = तुम । गइह = गाना ।
सूतल = सोया । मुसुकइह = मुस्काना, हँसना । होइहन = होगा ।
कहलको = कही हुई बात । जगवा = संसार । अइसन = ऐसा ।

उठे हिया पीर

बरिसे सवनवाँ, सिहरि उठे मनवा
कि भादो भरि आवे नैना नीर,
अगिया लागलि सखि हमरो करमवाँ
कि पीया बीनु हीया उठे पीर ।

दिन भर पनछी उड़ेला दूर देसवा

कि खोंतवा लवटि आवे साँझ,

बरहो बरिसवा पर लवटे ना सइयाँ मोरा

बाजे नाही मनवाँ के झाँझ ।

के हो मोरा हरिहें रे हीया के दरदिया

कि करिहें बिरह दुःख दूर,

के हो निरमोहिया के जोहिया लिअइहें

कि मथवा क पूछेला सेंदूर ।



अगिवा = आग । करमवा = भाग्य । पनछी = पक्षी । खोतवा = घोसला ।
दरदिया = दर्द । जोहिया = खबर । लिअइहें = लायेंगे ।

• सजन निरमोही

नाचे नयनवाँ में तोहरी सुरतिया,
सूनल मनवाँ क जगली पिरितिया।

गुन गुन बोलेला मन के सँवरवा,
तोहरे दरस बिनु कलपे परनवाँ,
रहि-रहि अब मोरी धड़केले छतिया।
नाचे नयनवाँ मे तोहरी सुरतिया॥

बोलिया बोलत मोहे कागा न भावे,
सुनि-सुनि जीया मोरा भरि-भरि आवे,
लोरिया चुवेले तोरी बाँचति पतिया ।
नाचे नयनवाँ मे तोहरी सुरतिया ॥

भइलनि अब निरमोही सँवरिया,
बीतलि जाले मोरी चढ़ली उमरिया,
मन समुझावत बीतेले रतिया ।
नाचे नयनवाँ मे तोहरी सुरतिया ॥



तोहरी = तुम्हारी । पिरितिया = प्रीति ।
भँवरवा = भ्रमर । लोरिया = आंसू । भइलनि = हुए ।

• सुधि के बदरा

सँवरिया, सुधिया सतावे सुनु तोर । सँवरिया०

पल भर बिसरे ना तोरी सुरतिया,
बटिया जोहत हो बितलि सारी रतिया,

सँवरिया, रोवत-रोवत भइलें भोर । सँवरिया०

महल अटारी मोरा मन ही ना भावे,

सूतल जियरा रे, मदन जगावे,

सॅवरिया, भइली नगरिया मे सोर । सॅवरिया०

चारूँ ओर चन्दा क छिटिके ॲजोरिया,

मोरे मंदिरवा में घिरलि अन्हरिया,

सॅवरिया, तूँ ही त हमरो ॲजोर । सॅवरिया०



सुनु = सुनो। तोर = तुम्हारा। जोहत = देखते। भइली = हुई।
छिटिके = फैले। अन्हरिया = अन्धेरा। तूही = तुम्हीं।

• भरम मोरे मन के

उमड़लि नेह आजु तोरे मन में,
या मन भरमल मोर गुजरिया ?
आजु जवानी हँसि-हँसि झूमे,
या झूमलि हर सांस उमिरिया ?

भ्रान मिलल मुरझल बिरवा के,
फुलवारी के गइलि उदासी,
मँहकलि कली-कली गलियन में,
आजु पिरितिया ना बनवासी,

बिंदिया चमके माथ रे गोरी !
या पूरन क उगलि अँजोरिया ?

मंहकि उड़लि धरती एक छन मे
पवन बहे रस, घर रस बोरे,
नेह पुकारे दूर छितिज से
झलकलि आस किरिन बड़ भोरे,

हीरा जड़लि गाँव तोरि गोरी !
या नीलम क बसलि नगरिया ?

सँवरल हर सिंगार आँगन में
झाँके जियरा ठाढ़ दुआरे,
छन मोहे, छन अँखिया सोहे
तोरि सुरतिया साँझ - सकारे,

कवि के लिखल गीत रे गोरी !
या सुर क तूँ एक लहरिया ?



भरमल = भ्रम में पड़ा हुआ। मुरझल = कुम्हलाया हुआ। पूरन = पूर्णिमा।
झलकलि = झलक मिलना। बसलि = आबाद हुई। सँवरल = सज जाना।

• पनघट

बलमा रोकेला डगरिया, मोर गगरिया फोरे ना। बलमा०

पनियाँ भरन जाईं बाबा के पोखरवा,
धड़ - धड़ हमके मचावेला रगरवा,
बहियाँ छोड़ मोरे गोइयाँ, पइयाँ लागूँ तोरे ना। बलमा०

ओही पनिघटवा रे सखिया सहेलिया,
हँसि-हँसि मारेला नजरिया बाँके छलिया,
अइसन मीले नीरजतिया मोर इजतिया बोरे ना। बलमा०

एक हाँक लाओ रामा बाबा के ओसरवा,
दूसरे में भइया मोरा बोले हो दुअरवा,
गरवा छोड़ि के बलमुआँ मोरे हाथ जोरे ना। बलमा०



रोकेला = रोकता है। रगरवा = झगड़ा। ओही = उसी।
अइसन = ऐसा। नीरजतिया = निम्न जात का। इजतिया = इज्जत।
ओसरवा = मकान के आगे का बरामदा। दुअरवा = बैठका।

• जनि जा बिदेस

सँवरिया जनि जा बिदेसवा की ओर।

होइ जइहे सूना मोरा घरवा-अँगनवाँ,
तोहरे दरस बिनु कलपी परनवाँ,
सिसिकत होइहनि भोर। सँवरिया०

दुइ-चारि दिनवाँ क बतिया जो रहिती,
त, कवनो जतनियाँ से जियरा मनइती,

बरिसन होला नाहीं थोर । सँवरिया०

जब-जब आई तिहुआर क दिनवाँ,
खनकि उठी हो मोरा हाथे क कंगनवाँ,

करिहें बिरह बरजोर । सँवरिया०

धूमिल होइहनि माथे क सेनुरवा,
सुखि-पुखि जइहनि परलो कजरवा,

लटि जइहें केसिया क छोर । सँवरिया०

तोहरे रहत पिया सब केहू आवे,
हित-मित नित मीठी बोलिया सुनावे,

जाते ई होइहें कठोर । सँवरिया०



जनि जा = मत जा । अँगनवाँ = आँगन । कलपी = तरसेगा । जतनिया = यत्न ।
धूमिल = फीका । सेनुरवा = सिंदूर । लटि जइहे = उलझ जायेंगे । केसिया = केश ।

• याद बचपन के

भइली बाबा की नगरिया सपनवाँ नु रे,
बिसरल दिनवाँ ।
दूनो भरि-भरि आवेला नयनवाँ नु रे,
याद आवे दिनवाँ ॥

घरवा अँगना दुआर बरिसे एतना पियार,
माई गरवा लगावें जइसे मोतिया के हार,
बाबा गोदिया खेलावें खरिहनवाँ नु रे,
याद आवे दिनवाँ ।

बड़ि नीमियाँ कि छहियाँ ओहि महुइआ तर की कुइयाँ,
संगवाँ खेलिया खेलत जब लागीं हम पइयाँ,
गोइयाँ माने नाहीं एकहू कहनवाँ नु रे,
याद आवे दिनवाँ ।

डोले पुरवा बयरिया सनकेरें धीरे-धीरे,
लागे सखियन क मेला ओहि पोखरिया के तीरे,
जब जाईं हम रांजे असननवाँ नु रे,
याद आवे दिनवाँ ।

जाईं होत भिनुसहरा महुइआ कि बारी,
जब भरि-भरि कुरूई ले धमवाँ पसारीं,
भौंरा गम-गम गमके अँगनवाँ नु रे,
याद आवे दिनवाँ ।

आजु मन परे भुलुवा आ नीमियाँ की डार्ही
पंचगोटिया खेलत दिन बितली ओसारी,
जब झीरि - झीरि बरिसे सवनवाँ नु रे,
याद आवे दिनवाँ ।

दिनवाँ बीति गइलें तनिको सजग नाहीं भइलीं,
हम हँसत - खेलत एतना जनही ना पवलीं,
मोरा जनमे क छुटिहे भवनवाँ नु रे,
याद आवे दिनवाँ ।

गरवा = गले । खरिहनवाँ = अनाज का खलिहान । गोंइयाँ = साथी ।
सवकेरे = प्रातः । बारी = बगीचा । कुरुई = डलिया ।

० भटकल भूलल मीत

भटकल भूलल मीत,

गीत के बस्ती में तूँ आवऽ,

थाकल पैर उमिरिया बोले

मंजिल पास बोलावऽ ! भटकल०

मजबूरी के मोती अइसन,
आँसू चुइ - चुइ चमके,
तड़पन के घर फूल खिलाइल,
पीरा छुइ - छुइ महके,

टीस उठे जो घाव जिया क
हँसि - हँसि गरे लगावS । भटकल०

इहाँ जोति, जियरा के जरले,
कहाँ जो मुख एक राति ठहरि ले,
चमकल दूर भागि के तरई
जो नियराय किनारा कसि ले,

असमंजस के चौराहा से,
आगे पाँव बढ़ावS । भटकल०



भटकल भूलल = भटके भूले। थाकल = थका। अइसन = ऐसा।
चुइ-चुइ = चू चू कर। तरई = तारा। नियराय = निकट आना।

• नेहियाँ के दियना

कवने साजन पर जियरा
लुटा अइलीं राम,

जाने कवने अदा पर
लुभा गइलीं राम । कवने०

गर्कसी है

जब से नजरिया
सँवरिया न लागल,
झन् - झन् - झन् मनवां
क तार - तार बाजल,

सुधि तन - मन के आपन,
भुला गइलीं राम ! कवने०

जवनी नगरिया
संवरिया क डेरा,
हमरी पिरितिया
के लागेला फेरा,

आजु नेंहियाँ क दियना,
जरा अइलीं राम ! कवने०



अइलीं = आये । गइलीं = गए । कवने = किस ।
जवनी = जिस । पिरितिया = प्रीति ।

• चन्दा मामा से

सरग के बासी ना सुनलऽ अरज मोरी,
मनलऽ ना एकहू तूँ बात ।

लरिकइयाँ मोरी मइया बतवली
तोहँसे हमार कवनो नात,
तरसत जियरा उमिरिया बितलि पर
ना भइलीं कबों मुलाकात ।
सरग के०

देइ असरा तुहूँ नाहीं पठवल
दुधवा कटोरवन भात,
सूखल जियरा के कोंप परल तब
लगि गइलें करिखा लिलाट।
सरग के०

आस - निरास मे दिनवाँ बितवलीं
चितलि अमावस रात,
भोरहीं पहुँचि तोहरे दुअरे पुकारवि
मथवा पर लेइ सवगात।
सरग के०

सुदिन देखाइ हम रथवा हँकाइब
आइबि राउर धाम,
उगिहे ॲंजोरिया जिनिगिया में ताहि दिन
रहिया चलबि अटिलात ।

सरग के०



लरिकइयाँ = बचपन । तोहसे = तुमसे । नात = रिस्तेदार ।
भइलें = हुआ । देइ = देकर । असरा = आशा । नाहीं = नहीं ।
गइलें = गया । आइबि = आयेंगे । राउर = आपके ।

• ना जाने कजरा के मोल

ना जाने कजरा के मोल,

बलम हमरो परदेसिया । ना जाने॰

हथवा में झनकेले हरी - हरी चुरिया

मुंदरी अँगुरिया में गोल,

कँगना खनकि उठे मनवाँ के अँगना

सूने ना पयलिया के बोल,

बलम हमरो परदेसिया । ना जाने॰

रहि-रहि के मंगिया क बिहँसे मेंनुरवा
अंगिया बहकि उठे मोर,
उड़ि-उड़ि अँचरवा कहे रे सुनु सखिया
बिदिया गुने ना अनमोल,
बलम हमरो परदेसिया । ना जाने०

झुलनी झमकि उठे नथिया के कगरी
झाँके झुमकिया की ओर,
पइयाँ के बिछुवा रे सँइया के पूछे
बूझे नाही रे अँठिलोल,
बलम हमरो परदेसिया । ना जाने०

★

मोल = कीमत, महत्व । झनकेले = झन-झन की आवाज करना । मुन्दरी = अँगूठी । अँगुरिया = उँगली । मँगिया = माँग । गुने ना = कोई गणना न करना । झमकि उठे = तिनक कर नाराजी प्रकट करना । पइयाँ = पाँव । अँठिलोल = कठोर हृदय वाला ।

• मिलल जो धार

मिलल जो धार
किनारा के दोस का देईं.
लहर के थपकी में
पीरा के हम सुता देईं।

कगार ढहि जो परे
खुद लहर के छूए से,
भला, कवन भरोस
बा जे सहारा लेईं।

बने लहर पर ना
जइसे कि कवनो चित्र,
नया सपन बना - बना
के हम मिटा देईं ।

डूब - डूब के उतराईं
जब अवाज मिले,
हर - केहू के हम
जीये क राज ना देईं ।

*

देईं = दूँ । छूए से = छूने से । बा = है । लेईं = लूँ ।
उतराईं = उबरूँ, ऊपर आऊँ । जीये = जीवित रहना ।

• भरलि गगरिया रस के

सखि, भरलि गगरिया रस के। सखि०

सम्भरि - सम्भरि पग धइली डगरिया,
भार के मारे नाहीं सम्भरे गगरिया,
रहि - रहि छन - छन छलके। सखि०

भरल जो रहितें हो नदिया के पनियाँ,
कइ के उड़इतीं मों कवनो जतनियाँ,
माथे ले अइतीं चल के। सखि०

अंग-अंग पर दरद के पहरा,
नेहु पर डाले उमिरिया के लहरा,
ना मनवाँ मोरे बस के। सखि०



सम्भरि = संभल कर। धइलीं = रक्खे।
छन-छन = क्षण-क्षण। जतनियाँ = उपाय।

• अरे मन, जो मीत पूछे

अरे मन, जो मीत पूछे
आपन दरद ना कहिहे,
सब भूल तूँ भुला के
हँसि-हँसि जबाब दीहे। अरे मन०

अनजान बनि के जेहि दिन
पहिचान तोसे कइलें,
दू दिन बहार देके
फिर मुँह जे मोड़ि गइलें.
काँटा जे तोके बोवे
तूँ फूल उनके बोइहे। अरे मन०

दुनियाँ जो तोके समुझे
चाहे कसूरवारा,
हर डेग पर मिले रे
जो दुःख - दरद क धारा,

घबरा के ना तूँ आपन,
ईमान डगमगइहे । अरे मन०

जब - जब लचार नयना
बरिसे जो बनि सवनवाँ,
टूटे जो धीर मन के
अध-जल रहे सपनवाँ,

हर हाल में तुँ रहिके,
आपन खुसी जनइहे । अरे मन०



कहिहे = कहना । दीहे = देना । जेहि दिन = जिस दिन ।
कसूरवारा = दोषी । डेग = कदम, पग । अधजल = अधूरा ।

श्रद्धांजलियाँ

• सरधा क फूल

देसवा गावे आज बापू के महान गुनवाँ । देसवा०

अइसन जोति जरल धरती पर
घोर अन्हरिया भागलि
कोटि-कोटि के लोगन के तब
सूतलि किसमत जागलि

सात समुन्दर पार इहाँ से, जाइ खबरिया लागलि,
उगलि भारत में अजदिया के चार-चनवाँ । देसवा०



तन बस्तर ना माथ पगरिया
कमर लंगोटी बाँधे,
बीच मड़इया बइठल भइया
जे दुनियाँ के साधे,
देखि गुलामी बेड़ी घर-घर, देहियाँ भइली आधी
गाँधी जुझलनि तब अहिंसा के बिसाल रनवाँ। देसवा०

सत्य अहिंसा न्याय के आगे
ई दुनियाँ थर्राइल
चमकल अइसन सत्र कि
बैरी देखि - देखि घबराइल
कटल न एको माथ कहीं पर अइसन मन्त्र फुंकाइल
आइल बापू के सपनवाँ के साँच दिनवाँ। देसवा०

आजु देस के उत्तर बापू !
करिया घिरलि बदरिया,
नगर - नगर के डगर - डगर मे
अइसन बहलि बयरिया,
देखि एकता हमरो जन मे, तन मे उठलि लहरिया,
थर - थर काँपे आजु बैरी के लुटेर मनवाँ । देसवा०

जगमग - जगमग जरल दिया बा
कुटिया अउरि महलिया,
सींचल बिरवा गह - गह फूले
भारत के फुलवरिया
अइसन जिया कचोटे रहि रहि, बापू ना देखवइया,
आजु सरधा के चढ़ाईं हम फूल - पनवाँ । देसवा०



गुनवाँ = गुण । अइसन = ऐसा । लोगन = आदमी । लागलि = लगी ।
उगलि = उदय हुआ । चनवाँ = चन्द्रमा । रनवाँ = लड़ाई का मैदान ।
करिया = काली । अउरि = और । कचोटे = पछताये । सरधा = श्रद्धा ।

• महाकवि निराला

कवने असगुनवाँ, थीरइली लहरिया
कि गंगा - जमुनवाँ के तीर।
छिपि के सुरसती, छिपवली अँचरवाँ मे
हमरो 'निराला' तसबीर॥

सूनी भइलि आजु हिन्दी क मड़इया,
कि देसवा क सूनी तकदीर।
डहके बसन्त जइसे कन्त बिनु धनियाँ,
कि ढरके नयनवाँ से नीर॥

मटिया जे समुझल अन - धन सोनवाँ,
कि धनि रे पुरुख तोरे धीर।
जग - मग, जग - मग जग बर माँगे,
कि सरदा से बनि के फकीर॥



कवने = किस। असगुनवाँ = अशुभ समय। सुरसती = सरस्वती। छिपवली = छिपाई। अँचरवाँ = आंचल। डहके = भीतर ही भीतर तरस कर रोना। जइसे = जैसे। धनियाँ = स्त्री। ढरके = गिरे। नयनवाँ = नैना। मटिया = मिट्टी। समुझल = समझा।

● नेहरू के याद में

मन में रहि-रहि उठे हिलोर,
नजर ना आवे तनिक अँजोर
तरइया डूबलि कवनी ओर।

जियरा डोलि उठलि धरती के
कौन बन्हावे धीर,
थीर हो गइल सात समुन्दर
लहर-लहर में पीर,

आजु बहावे नील अकसवा
केकरी खातिन लोर। तरइया०

बेसुध भइल हिमालय गलि-गलि
टुटलि दहिनकी बाँह,
नेफा से लद्दाख निहारे
करी आड़ के छाँह,

भरलि गगरिया भइलि न ऊपर,
बिचहीं टूटलि डोर। तरइया०

बिधना भइल बाम देसवा से
रूसि गइलि तकदीर,
जेकरी खातिन दुनियाँ तड़पे
छिपलि कहाँ तसबीर,

अइसन कवन बेदरदी लागल,
दिन ही में ठग चोर। तरइया०

एक दिया बिनु भइलि अन्हरिया
सूझे ऊँच ना नीच,
अइसन नइया फँसलि देस के
जाइ भँवर के बीच,

आजु जगवले जगे न मलहा,
जतन भइलि ना थोर। तरइया०

के सनमानी पंचसील के
सत् से करी पियार,
राह अहिंसा, के अपनाई
तन मन देइ नेवछार,

कवन पुरुख बिनु अँखिया तरसे
बरिसे नीर सजोर। तरइया०

★

तरइया = तारे। कवनी = किस। बन्हावे धीर = सांत्वना देना। केकरी = किसके। खातिन = लिए। जेकरी = जिसके। जतन = उपाय। सनमानी = सम्मान देगा। कवन = कौन। नेवछार = अर्पण।

• सुकवा डुबल कवनी ओर

कवने असगुनवाँ में टूटली तरइया,
कि सुकवा डुबल कवनी ओर,
कवने हि दियना क जोतिया बुझाँल आजु
रूसि गइलें जग मे अँजोर।

घिरि अइली देसवा पर बिपती बदरिया
कि नाहीं कवनो ओर ना छोर,
भोरहर निनियाँ मे काली रे नगिनियाँ
कि डँसि गइली अँगुरी के पोर।

डोलि उठलि धरती आ सिसिके अकसवा
कि अब ना सगरवा मे सोर,
बजरो करेजवा क पिघिलेला हिमि-गिरि
टुटली कगरिया क जोर।

नैन ढूँढ़े नेहरू आ जियरा जवाहर,
मनवाँ जे मोतिया के तोड़,
ढूँढ़े महतारी आजु पलना में ललना के
ढरे छव - छव पतियन लोर।

रोइ-रोइ पूछे हो गुलअवा की डढ़िया
कि के हो मोरा करिहें अगोर,
के हो मोरा कलिया के हियरा लगइहें
कि हँसि-हँसि बगिया में भोर।

सत् आ अहिंसा क रहिया देखाइ आजु
बान्हि पंचसीलिया क डोर,
गौतम अस उठि चुपके डहरि गइलें
जगवा क जीया झकझोर।

३

असगुनवाँ = अशुभ समय। तरइया = तारा। सुकचा = शुकतारा।
कवनी = किधर। जोतिया = प्रकाश। बिपती बदरिया = दुःख के बादल।
भोरहर = प्रातः। निनियाँ = नींद। सगरवा = सागर। कोड़ = खजाना।
हियरा लगइहे = हृदय से लगाना। डहरि गइलें = चले गए।

• याद सहीदन के

हँसि-हँसि आजु सहीद के माटी करे सिंगार अपने हाथन से ।
हो ऽ अपने०
रहि-रहि चरन पखारे रतिया भर, असमान अपने लोरन से ॥
हो ऽ अपने०

जेकरे करतब के आगे
पवरूख भी माथ नवावे,
सागर अउरि पहाड़ भी
आगे - आगे राह बनावे,

सरधा भरलि लगावे जग, पग-धूरि अपने माथन से ।
हो ऽ अपने

जब-जब धरती जहाँ रँगाइलि
जेकरे खून के फाग से,
लागलि तीरिथ लाखन बढ़ि के
तीरिथ - राज प्रयाग से,
बना के कजरा भसम चिता के, लोग लगावे आँखन मे।
हो ऽ अपने०

जुग-जुग तक इतिहास याद मे
जिनिके दिया जरावे,
चान-सुरुज क पहिल किरिनियाँ
उनके तिलक लगावे,
तिल भर धरती के पाछे जे, हँसि के जुमल परानन से।
हो ऽ अपने०

केतने गोद सून फिरु होइहें
होली जरी पियार के,
हँसि-हँसि मन से जीत मनइहें
लाख सुहागिनि हार के,
झोरी भरि देइहें अनिगिनि, अपने सेनुरा के दानन से।
हो ऽ अपने०



लोरन से = आँसूओं से । करतब = कर्त्तव्य । पवरुख = शक्ति । नवावे = झुकावे । सरधा = श्रद्धा । धूरि = धूल । रंगाइलि = रंग उठी । जेकरे = जिसके । जुग-जुग = युग-युग । किरिनियां = किरणें । जुझल = लड़ उठा । परानन = प्राणों । पियार = प्यार । सेनुरा = सिंदूर ।